प्रमाण-पत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि कु. रफाकत शेख ने मेरे निर्देशन में " ममता कालिया की कहानियों का समग्र अनुशीलन " लघु शोध-प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल् की उपाधि के हेतु लिखा है। जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं। मैं संपूर्ण लघु शोध-प्रबन्ध को आद्योपांत पढ़कर ही यह प्रमाण-पत्र दे रहा हूँ।

सुनीलकु

(डॉ. सुनीलकुमार लवटे)
शोध निर्देशक

कोल्हापुर।
दिसम्बर 31 : 12 : :१९९० ।

प्रमाण पत्र

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि डॉ. सुनीलकुमार लवटे जी के निर्देशन में `ममता कालिया की कहानियों का समग्र अनुशीलन` लघु शोध प्रबन्ध मैंने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल्.की उपाधि के हेतु लिखा है। जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं।

कोल्हापुर ।
दिसम्बर ३१ : १२ : :१९९०।

(कु.रफाकत शेख)
शोध छात्रा

भूमिका

एम.ए.की पढ़ाई के बाद जब मैंने एम्.फिल्. करना शुरु किया, तब लघु शोध-प्रबन्ध के लिए विधा और कृतिकार निश्चित करने का प्रश्न खडा हुआ। बचपनसेही मुझे कथा सुनने,पढ़ने का शौक रहा है। इसी शौकने मुझे कथा विधा की ओर आकर्षित किया। रही बात कृतिकार की, जब मैंने होश सँभाला तो कथा लेखिकायें मुझे अपनी ओर आकर्षित करती रहीं। परिवार में, समाज में इर्द-गिर्द नारी की घुटन को मैंने करीबसे देखा ,परखा था। नारी होने के नाते परिवेश की दमघोंट नारी जिंदगी मुझे हमेशाही बेचैन बनाती थी। इस घुटन की परिधी को तोडनेवाली लेखिकायें पसंद आती थीं इसका कारण परिवेशकी ये परिस्थितियाँ थीं।

आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में विशेषत: सन् ६० के बाद ऐसी लेखिकाओंका एक पूँज-सा उभर आया, जिन्होंने नारी की परंपरागत जीवन की तमाम शृंखलाओं को तोड़ने की कसम-सी खा रखी थी। मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा,सूर्यबाला, कुसुम अन्सल, मालती जोशी, मृदुला गर्ग, निरुपमा सेवती कितनेही नाम गिने जा सकते हैं। अनुसंधान के हेतु मैं ऐसी लेखिका की तलाश में थी, जो अबतक इस क्षेत्र में गुणवत्ता के बावजूद भी उपेक्षित रही हो। इस खोज-बीन में ममता कालिया ने मुझे अपनी ओर खिंचा। एम्.फिल्. उपाधि के हेतु उनकी कहानियोंका समग्र अनुशीलन करने के हेतु "ममता कालिया की कहानियों का समग्र अनुशीलन" विषय मैंने निश्चित किया। मेरे निर्देशक डॉ.लवटे जी ने उसकी बहुत ही स्पष्ट रुपरेखा बनाने में मदद की। उसका मूर्त रुप मेरा यह लघु शोध-प्रबन्ध है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध का प्रथम अध्याय उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को समर्पित किया गया है। किसी लेखक के साहित्य को भली-भाँति जानने के लिए यह जरुरी हो जाता है कि उसकी जीवनी की पड़ताल की जाये। ममता जी की जीवनी के बारेमें शायद ही लिखा गया है। जीवनी को मैं विस्तार के साथ खींचना चाहती थी परंतु अंत:साक्ष्य और बाह्य साक्ष्य दोनों पर, दोनों स्त्रोत

मेरे लिए धुंधले ही साबित हुये। फिर भी जितना मैं जुटा पायी उसके आधारपर उनकी जीवनी, व्यक्तित्व और कृतित्व का लेखा-जोखा इसमें उतारा है। प्राप्त परिस्थितियों में जितना न्याय इस पल्लुको मैं दे पायी वह आपके सामने है। आशा है इसे ममता कालिया का व्यक्तित्व और कृतित्व पहले के तुलना में काफी स्पष्ट, निखरा हुआ आप पायेंगे ठीक वैसे जैसे ट्रेसिंग पेपर हटाने के बाद कोई नक्काशी अपनी मूल सुषमा को लेकर उभर आती है।

'कहानियों का विकासात्मक अध्ययन' शीर्षक दूसरे अध्याय में उनकी कथा-यात्रा का आलेख खींचने का विनम्र प्रयास किया गया है। इस प्रयास में उनकी कथा लेखन के पिछे सक्रीय प्रेरणा स्त्रोत की खोज की है। उनकी आरंभिक कथाओंका शोध भी लिया गया है। उनकी आरंभिक कहानियों के स्वरुप को परखकर समग्र कथा यात्रा को विकास की विभिन्न स्थितियों के जरिये विश्लेषित करनेका प्रयास किया गया है। इस विकास यात्रा में मैंने अनुभव किया कि उनकी लेखनी निरंतर नये प्रयोग और नयी शैली की तलाश में लालायित रहती है।

तीसरे अध्याय में उनकी कहानियों के स्वरुपगत अध्ययन को लक्ष्य बनाया है। कहानियों के वर्ण्य विषय, कहानियों में चित्रित स्त्री-पुरुष संबंध, यौन समस्या, कहानियोंका शिल्प और शैली, कहानियों के पात्रों का मनोविश्लेषण आदि के जरिये उनकी कहानियों के सूरत को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

ममता कालिया की कहानियों में प्रतिबिंबित नारी शीर्षक अध्याय इस लघु शोध प्रबन्ध का केन्द्रिय अध्याय माना जाना चाहिए। ममता कालिया की कहानियोंमें नारी हमेशा केन्द्र में रही है। उन्होंने अपनी कहानियों के जरिये नारी के जितने रुप और समस्याओंका चित्रण किया है वैसा शायद ही किसी लेखिकाने किया होगा। ममता कालिया नारी की समस्या को पाठकों के सामने रखने मात्रसे संतुष्ट नहीं होती बल्कि उनके समाधान को सूझाकर अपने दायित्व को पूरा करती नजर आती है। 'आधुनिकता' उनकी नारी की खासियत रही।

इसे देखते हुए उसके परिप्रेक्ष्य समकालीन मूल्यों की कसौटीपर उनकी नारी को जाँचने,परखने का प्रयास किया है।

अंतिम अध्याय ' ममता कालिया और हिंदी कहानी ' है। उपसंहारात्मक इस अध्याय में ममता कालिया पूर्व हिन्दी कहानी की स्थिति का जायजा लेकर ममता जी की समकालीन कथा-लेखिकाओं के कथाओंके स्वरुप को कैनवास में रखकर ममता जी की कहानियों के अलगपन को रेखांकित किया गया है। हिंदी कहानी कला में ममता जी के योगदान को भी बिनाभूले अंकित किया गया है।

लघु शोध-प्रबन्ध के अंतरंग के इस संक्षिप्त परिचयसे आप जान पायेंगे कि कथाकार ममता कालिया के चित्र को स्पष्ट करने के साथ-साथ उनकी कहानियों का समग्र अनुशीलन भी इसमें प्रस्तुत किया गया है। ' परिशिष्ट ' के अंतर्गत उनकी साहित्य संपदा, संदर्भ ग्रन्थों की सूची, पत्र-पत्रिकायें आदि को देकर अपने तथ्यों के स्त्रोत, सूचिबध्द किये हैं ताकि परीक्षक, पाठक, अनुसंधाता मेरी विवेचना की प्रामाणिकता को आसानीसे टटोल सके।

इस शोध कार्य में निर्देशक के रुपमें डॉ.सुनीलकुमार लवटे जी ने सामग्री जुटाने में तथा समय-समय पर स्पष्ट निर्देश एवं सुझाव देने में जो हार्दिक सहयोग दिया है, उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर के प्राचार्य डॉ.बी.बी.पाटील जी ने जो उचित मार्गदर्शन किया है उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मेरा कर्तव्य है। सौ.शशिकला जैन जी के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ।

यह शोध कार्य पूरा करने के लिए श्री. रमेश ढेरे जी ने जो मदद की उसके लिए उनका धन्यवाद।

इस शोध कार्य को संपन्न करने के लिए अनेक संदर्भ ग्रंथ तथा अन्य आवश्यक पुस्तकों की सहायता, शिवाजी विश्वविद्यालय, महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर के ग्रन्थालयों से प्राप्त हुई है। वहाँ के अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग के प्रति विनम्र आभार।

जिनकी प्रेरणा से मैं यह लघु शोध प्रबन्ध पूरा कर सकी, वे हैं मेरे परमपूज्य माता-पिता जी, और माई जिनके ऋण में ही रहने में मुझे खुशी होगी।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध का टंकलेखन श्री. बाळकृष्ण रा. सावंत (कोल्हापुर) ने किया इसके लिए मैं उनकी आभारी हूँ।

कोल्हापुर।
दिसम्बर 31 :12: :१९९०

रफाकत शेख
(शोध-छात्र)